THESIS,

PRONOUNCED AT THE DISPUTATION IN THE HINDOOSTANEE LANGUAGE, ON THE TWENTIETH OF SEPTEMBER, 1804.

BY

MR. J. ROMER,

STUDENT OF THE COLLEGE OF FORT WILLIAM.

Digitized by Google

Digitized by Google

दअ़्वा

ममालिकि हिंद की ज़बानों की अस़्ल बुनयाद संस्कृत है ॥

लेकिन जो शख़्स इस दअ़्वेके स़ाबित करने का इरादः करे उसे हिंदूस्तान की बअ़्ज़ी ज़बानि मुरव्वज से ख़ूब वाक़िफ़ होना और ह़ास़िल करना ज़ुरूर है गोकि वुह सबसे माहिर नहो पस मुझे अगर यिह बात लाज़िम नहोती कि इस बाति दअ़्वेमें

Digitized by Google

कुछ क़सूर नकरूं तो इस काम में हरगिज़ दख़ल नकरता जिसके रद्द ओ वदल करनेके लिये ऐक वस्फ़ भी मुझमें नहीं ॥

जब कि यिह माजरा यूं है जैसा मैंने बयान किया तो उन वसीलों को जो मैं अपने दअ़वेके क़ाइम रखने को लासकता हूं इख़्तियार करके उन क़ी होश मुसन्निफ़ों से जिन्होंने इस मुक़द्दमे में लिखा है ख़्वाह लफ़्ज़ हों या मअ़ने इसतआ़रः करता हूं उम्मेदवार हूं कि मेरा यिह उज़्र क़बूल हो ॥

Digitized by Google

चुनांचे उन मुसन्निफ़ों में जोंस साहिब सब से नामवर है लेकिन उसके क़िसम बक़िसमि इशनवाक़ की तफ़तीश और मूशिगाफ़ी से बाज़ रहता हूं इस वास्ते कि इस कलाम की तर्ज़ से ज़रूर है कि तामक़दूर जितना होसके मुख़्तसर करूं पस उस साहिब की किताबों के जुदे जुदे इक़्तबास करने से उन दलीलों की वजूह के ज़ाहिर करने के इवज़ उलझेड़ा डालना है॥

तमाम हिंदूस्तान की मुख़्तलफ़ि ज़बानों की जड़ संस्कृत है कि जिस

Digitized by Google

से वे पैदा हूई हैं इस सबब मेरे ख़ियाल में यिह बात ठहरती है कि हरऐक का जुज़्वी अह़वाल कि जिसमें संस्कृत की मुवाफ़क़त ओ मुख़ालफ़त का बयान हो लिखा जावे ॥

और वुह रिसालः कि संस्कृत और पराक्रत की ज़बान के बयान में लिखा और मशहूर है जो इसी वज़अ़ का है तो काफ़ी है कि उसके साहिबि फ़हम मुसन्निफ़ की बातों से जोकुछ कि इस दअ़वेके बर क़रार रखने को मेरी दरयाफ़ में

Digitized by Google

मुनासिब है इसतिंबात करूं और उस सबब से कि जिसका मज़कूर इबतदाय कलाम में मैं ने किया अमदन यिह काम करता हूं ॥

इस रिसालए मज़कूर के मुसन्निफ़ ने पराकृत या सरसुती बाला बानीका बयान करके हिंदी या हिंदवी ज़बान में यूं लिखा है कि मअ़लूम होता है जो आज कल की हिंदूस्तानी ज़बान उससे निकली है और उस भाषा में नज़म की आज़् माइश करने से जो मुशबहत हिंदी और संस्कृत मे है सो बहुत

साफ़ ठहरती है और जो कोई इन दोनों ज़ुबानों से वाक़िफ़ है बे शुबहः यिह कहेगा कि हिंदी औवल संस्कृत से नकली है अकसर अलफ़ाज़ जिन के वजह तसमियः से यिह खुलता है कि वे निरी संस्कृतके हैं उस ज़ुबान में हूबहू मुंदर्ज हैं और बहुत और लफ़्ज़ों में सिवा आख़िरी हरफ़ि इल्लत कि साकिन करने से और कुछ तबदील नहीं हूई और बहुत ऐसे हैं कि सिर्फ़ उन हरफ़ों के बदलने से जो मुतबद्दल होते हैं मुतफ़ावत हो जाते हैं बाक़ी थोड़े से शाज़ लफ़्ज़ों

Digitized by Google

के सिवा बअ़ासानी अस्ल संस्कृत में पाए जाते हैं और यिह वुह जड़ है कि जिस से हिंदी पैदा हूई है न हिंदी वुह ज़ुबान है कि जिस से संस्कृत ने रौनक़ पाई है इशतक़ाक़ से साबित होती है क्यूं कि मुशाबहत हिंदी में नहीं रहती और संस्कृत में क़ाइम रहती है ॥

गौरीया बंगला ज़ुबान तमाम सूबए बंगाले में सिवाय सरहद्दी ज़िलओं के मुरव्वज है और लोग कहते हैं कि सिर्फ़ पूरब की तरफ़ खूब सफ़ाई से बोली जाती है और

Digitized by Google

जिस तरह वहांके रहने वाले उस ज़ुबान को बोलते हैं सो इसमें बहुत कम अलफ़ाज़ हैं कि जिन की बुनयाद असल संस्कृत से नहीं ॥

दूसरी ज़ुबान जो इसी सिलसिले में मैथला या तिरहुतया है सो भी बंगले से बहुत मुशाबिः है और वे हरूफ़ कि जिन में वुह लिखी जाती है उन में और बंगले के हरफ़ों में थोड़ा सा फ़रक़ है ॥

वुह ज़ुबान जो सूबः उड़ीसा या

उड़ा देसा में बोलते हैं जिसका नाम उड़या है जहां तक कि नाक़िस़ नमूने से दरयाफ़्त होती है तो इस में संस्कृत के अलफ़ाज़ जो तरह बतरह से ख़राब हूऐ हैं और बअ़ज़े फ़ारसी और अ़रबी लफ़ज़ जो हिंदूस्तानी के वसीले से मुसतअ़ार हैं और वे कि जिनकी असल में शक है मिले हैं ॥

ये वे पांचों लुबानें हैं कि हिंदूस्तान के उत्तर और पूरब के बसने वाले बोलते हैं और ये पांच

Digitized by Google

लुबानें जो इस ममलुकत के दखन और पछम की तरफ़ के बाशिंदे बोलते हैं मैं इसी ही सनद पर बयान करता हूं ॥

पहली उनू में से तामल जिस लुबान का मुसन्निफ़ ने व्याकरन और उवेशान की ऐक ऐक पोथी देखी है और इन दलीलों से यिह इरशाद किया है कि तामला में बहुत से संसृत के अलफ़ाज़ जों के तों या कुछ तबदील पाऐ हूऐ मौजूद हैं और अकसर बिगडे हूऐ और ऐसे बहूत हैं

कि जिन की असल में शुबह है ॥

दूसरी महाराशतर या महरटे की ज़ुबान से हिंदूस्तान की और ज़ुबानों की मानंद बहूत सी साफ़ संस्कृत की बातें हैं और उससे ज़ियादः ख़राब अलफ़ाज़ उसी भाषा के आते हैं और थोडे से अलफ़ाज़ि अरबी ओ फ़ारसी मख़लूत हैं और सिवाय इन्ह के अकसर ऐसे हैं कि जिन्ह की बुनयाद कुछ मअलूम नहीं होती ॥

तीसरी कारनाटा या कारनाड़ा

Digitized by Google

जो कारनाटक की पुरानी भाषा है जो मुशबहत संस्कृत में और दखन की और लुबानो में है सो यहां की बोली में भी है काड़े भी अकसर और दखनी क़ौमों की मानन्द अपनी मुकली लुबानों के साथ बदवज़ई से संस्कृत के तलफ्फुज़ करने में बंगाले और उसके मुलहक़ मुलकों के बद नमुने की पैरवी नहीं करते ॥

चौथी तैलांगा तेलंगा तिलांगा नाम क़ौम का और लुबान का और

Digitized by Google

उन हरफों का कि जिन में यिह बोली लिखी जाती है तिनों का है और वहां के ब्रह्मन इन्हीं हरफों से संस्कृत के अलफाज़ लिखते हैं और कहते हैं कि संस्कृत के लफ्ज़ तिलांगे के मुहावरे में और दखनी बोलियों मे लियाद: हैं ॥

पांचवीं गुरजरा जिसको गुजरात कहते हैं वहांके रहने वाले वुह लुबान बोलते हैं कि जिस का नाम उनका हम नाम है सो हिंदी मे अकसर मुशाबिहै

Digitized by Google

और जिस ख़त में वुह लिखी जाती है मुंडी नागरी से थोड़ा ही कुछ फ़रक़ है ॥

मैं ने इसी सूरत से एक मश्क़ूल ओ मुश्तबर किताब का बातें जो इस दश्वे के बर क़रार रखने को किफ़ायत करती है इजतमाश्र कर लीं हैं और सिर्फ़ इतनी बात लियादः कहता हूं जब लग संस्कृत की असल लउसूल हाथ नलगे तब तक चाह इये की हम हर सूरत में इसी को हिंदूस्तान की उमल लिसान समझें ॥

Digitized by Google